उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः ११५२ /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 30–11–2023

दिनांक : 30 नवम्बर, 2023
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की सोलहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की सोलहवीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 30 नवम्बर, 2023 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक (ऑनलाइन); शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; रेशम विभाग; मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

आगामी सप्ताह (30 नवम्बर से 06 दिसम्बर, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (30 नवम्बर से 06 दिसम्बर, 2023) के प्रारंभिक चरण में 30 नवम्बर को प्रदेश में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने तथा 01 से 03 दिसम्बर, 2023 के दौरान मुख्यतया प्रदेश के दक्षिणी भाग में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी भाग बुंदलेखण्ड एवं विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में अधिकतम तापमान 22–24 डिग्री सेल्सियस एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग या भावर तराई क्षेत्र के मध्य भाग एवं बुंदेलखण्ड के क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में अधिकतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस तथा उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भागों में अधिकतम तापमान 28 से 30 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी पूर्वी भाग एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग में न्यूनतम तापमान सामान्य से अत्यधिक (4 से 6 डिग्री सेल्सियस अधिक) जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक (2 से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक) रहने की संभावना है। प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, भावर तराई क्षेत्र के मध्य भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस तथा भांवर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, दक्षिणी पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा बुंदेलखण्ड एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में न्यूनतम तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 14 से 16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (07 दिसम्बर से 13 दिसम्बर, 2023) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (07 दिसम्बर से 13 दिसम्बर, 2023) के दौरान प्रदेश में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भागों में अधिकतम तापमान

सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। इस दौरान भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में अधिकतम तापमान 20–22 डिग्री सेल्सियस, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, भावर तराई क्षेत्र के मध्य भाग में अधिकतम तापमान 22–24 डिग्री सेल्सियस तथा उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भागों में अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भागों में न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। भांवर तराई क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत नियंत्रण तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस तथा भांवर तराई क्षेत्र के मध्य भाग, बुंदेलखण्ड क्षेत्र के शेष भाग एवं मध्य मैदानी मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग मे न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में न्यूनतम तापमान में 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 28 नवम्बर, 2023 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 134.84 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 74.41 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 55.19 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 102.00 लाख हे. के सापेक्ष 45.02 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 44.14 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.94 लाख के सापेक्ष 1.46 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 75.45 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.15 लाख के सापेक्ष 0.03 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 26.65 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 6.85 लाख हे. के सापेक्ष 6.17 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 90.07 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 4.68 लाख हे. के सापेक्ष 4.32 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 92.33 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.67 लाख हे. के सापेक्ष 4.70 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 83.06 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.60 लाख हे. के सापेक्ष 4.29 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 93.30 प्रतिशत है जबकि राई–सरसों के 13.00 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 12.21 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 93.93 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- गेहूँ में बुवाई के 20 से 25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था पर) आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई अवश्य करें। ऊसर भूमि में 25 से 30 दिन पर सिंचाई करें।
- रबी फसलों की उन्नत प्रजातियों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता एवं समय विशेष के अनुसार किया जाय।
- जीवांश खादों का प्रयोग अवश्य किया जाये।
- रबी फसलों की बुवाई के लिये चयनित किस्म का स्वस्थ, शुद्ध एवं प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें। यदि प्रमाणित बीज उपलब्ध न हो तो बीज शोधन के बाद ही बुवाई करें। हर तीसरे वर्ष बीज अवश्य बदल दिये जाये।
- रबी फसल गेहूँ में मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग किया जाय। यदि पूर्व फसल में बुवाई के समय जिंक प्रयोग न किया गया हो तो जिंक सल्फेट का प्रयोग खड़ी फसल में संस्तुति के अनुसार किया जाय।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था में) हल्की सिंचाई अवश्य करें। विशेष रूप से ऊसर भूमि में पहली सिंचाई 25–30 दिन बाद हल्की ही करें।
- गेहूँ की विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियां जैसे के. 9423 (उन्नत हलना), के–7903 (हलना), डी. वी.डब्लू.–107, एच.डी.–3059, एच.आई.–1563, डी.बी. डब्लू.–316 एवं पी.वी.डब्लू.–833 आदि की बुवाई 15 दिसम्बर तक अवश्य कर दें।
- दिसम्बर में गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की पैदावार 3 से 4 कु./हे. घटाव होती है। गेहूँ की बुवाई सीड ड्रिल/हैपी सीडर से करने पर उर्वरकों एवं बीज की बचत की जा सकती है।

- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये खरपतवारनाशी सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्राम (2.5 यूनिट) को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 किलोग्राम प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये 2–4डी, सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हे. अथवा 2–4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हे. की मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 25 से 30 दिन बाद छिड़काव करना चाहिये।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों को एक साथ नियंत्रण के लिये पेंडीमेथिलीन 30 प्रतिशत ई. सी. की 3.30 लीटर प्रति हे. बुवाई के 03 दिन के अंदर 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा मैट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 ग्राम प्रति हे. बुवाई के 20 से 25 दिन बाद 500 से 600 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

जौं की खेती

- जौं की विलम्ब बुवाई की दशा में के.बी.–1425 (आजाद जौ–33), एन.बी.डी.–1445 (नरेन्द्र जौ–1445), डी. डब्लू.आर.बी.–137, डब्लू.आर.बी.–101, डब्लू.आर.बी.–123 प्रजातियों की बुवाई करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- सरसों की फसल में आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई 30–35 दिन बाद शाखाओं के निर्माण पर करें तथा सिंचाई के बाद शेष नत्रजन की पूर्ति यूरिया (85 किग्रा. प्रति हे.) से करें।
- सरसों में आवश्यकता से अधिक घने पौधों की छटाई/विरलीकरण बुवाई के 15–20 दिन बाद या प्रथम सिंचाई से पूर्व कर पौधों से पौधों की दूरी 10–15 से.मी. कर देनी चाहिये।
- सरसों की फसल में दो निराई–गुड़ाई 25–30 एवं 40–45 दिनों बाद कर लेने से अधिक पैदावार प्राप्त होती है।
- पौधों के समुचित विकास एवं अधिक शाखाओं हेतु टॉपिंग अवश्य करें।
- राई–सरसों में अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराईड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 600–750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना, मटर और मसूर की समय से बोई गई फसलों से खरपतवार निकाई–गुड़ाई द्वारा नियंत्रित करते रहें।
- चना, मटर व मसूर में प्रथम सिंचाई आवश्यकतानुसार फूल आने से पहले तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाना बनते समय करें। फूल आते समय सिंचाई कदापि न करें इससे हानि होगी।
- चने की देर से बुवाई हेतु आई.पी.सी. 2006–77, आई.पी.सी. 2005–62, जी.एन.जी.–2207 (अवध), राज विजय चना–204 (आर.वी.जी. 204) तथा काबुली चना की किस्मों फूले विक्रम (जी.–08108), जी.एल.के. –28127, वल्लभ काबुली चना–1, पूसा 3022 तथा जी.एन.जी.–1985 आदि किस्मों का चयन करें। चना की विलम्ब से बुवाई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर दें।

गन्ना की खेती

- परिपक्व गन्ने की ही कटाई करें तथा गन्ने की कटाई जमीन की सतह से करें।
- शरदकालीन बावक गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।
- श्रमिकों के अभाव की दशा में खरपतवार नियंत्रण हेतु मेट्रीब्युजीन 70 प्रतिशत 500 ग्राम एवं 2–4 डी. 58 प्रतिशत 2.5 ली. को 1000 ली. पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की लाइनों में छिड़काव करें।
- गन्ने के साथ आलू की अन्तःफसली खेती की दशा में 60 किग्रा. नाईट्रोजन प्रति हे. की दर से मिट्टी चढ़ाते समय टॉपड्रेसिंग करें।
- गन्ने के साथ लहसुन की अन्तःफसली खेती की दशा में 20 किग्रा नाईट्रोजन प्रति हे. की दर से दूसरी सिंचाई पर टॉपड्रेसिंग करें।

- अन्तःफसलों में समय–समय पर सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करते रहें।
- लाल सड़न रोग से प्रभावित गन्ने की कटाई के पश्चात खेत की गहरी जुताई कर ठूठों को निकाल दें तथा फसलचक्र अपनायें।

सब्जियों की खेती

- वर्तमान मौसम झुलसा के अनुकूल है। आलू में लगने वाली पछेती झुलसा बीमारी का प्रकोप आलू की पत्ती तने तथा कंदों सभी भागों पर होता है। इसकी रोकथाम के लिये जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 1.5 से 2 कि. ग्रा. प्रति हे. दवा के घोल का छिड़काव 8 से 10 दिन के अंतराल पर करें।
- आलू की पत्ती मुड़ने वाला रोग जो कि एक वायरल बीमारी है जो वायरस (पी.एल.आर.वी.) के द्वारा फैलती है इस बीमारी की रोकथाम के लिये वाहक कीट की रोकथाम हेतु फास्फोमिडान का आक्सीडिमेटान–मिथाइल अथवा डाईमिथोएट का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर एक से दो छिड़काव दिसम्बर जनवरी में करना चाहिये।
- टमाटर की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिये 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर) की दर से मैंकोजेब का छिड़काव करें। फसल को कीटों से बचाने हेतु नीम आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- प्याज की संस्तुत प्रजातियों यथा कल्याणपुर, लाल गोल, पूसा रत्नार, एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, एग्रीफाउण्ड व्हाईट तथा संकर प्रजातियों तथा एक्स कैलीबर, बरगण्डी, केपी, ओरिएण्ट, रोजी की नर्सरी अभी तक न डाली हो तो यथाशीघ्र नर्सरी डालें।
- पालक, मूली, शलजम, चुकंदर, गाजर की उन्नत संस्तुत किस्मों के बीज की बुवाई मेड़ों पर करें।

बागवानी

- आम में गुजिया कीट को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए दिसम्बर माह में भूमि से लगभग 40 से.मी. ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौड़ी पट्टी लपेट कर सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा. की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- केले की पत्तियों पर काले धब्बे एवं सड़ने की समस्या हो तो 1.0 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा अवांछित पुत्तियों की कटाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को सर्दी से बचाने के लिये पशु घर का उचित प्रबंध कर लें।
- पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिये। जिसे एक या दो दिन बाद अवश्य बदल दें।
- पशुओं का खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक का चाटन भी करायें।
- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) टीकाकरण कराया जाय। यह सुविधा चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- थनैला रोग से बचाव के लिये दुहान के बाद पशुओं को बैठने न दें।
- जलभराव की स्थिति होने पर मच्छर/मक्खी का प्रकोप बढ़ जाता है, जिससे गंभीर बीमारियों होती है जिसके बचाव हेतु आवश्यक दवाओं/कृमिनाशक का नियमित छिड़काव अवश्य कराया जाय।
- बकरी पालन, भेड़ पालन, सूकर पालन एवं कुक्कुट पालन की तकनीकी जानकारी तथा इन सभी विषयों पर चल रही विभागीय योजनाओं के बारे मे सभी कृषक/पशुपालक अपने निकटतम मुख्य पशुचिकित्साधिकारी/ पशुचिकित्साधिकारी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं. –1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- झींगा पालने वाले मत्स्य पालक उसे तालाब से निकाल कर बिक्री करें अन्यथा तापमान कम होने पर नुकसान होगा।
- यदि पानी का तापक्रम 20 डिग्री से. से कम हो जाय तो मछलियों को आवश्यकतानुसार पूरक आहार दें। तालाब में गोबर की खाद एवं रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग भी बंद कर दें।

- यदि एपीजोटिक अल्सरेटिव सिण्ड्रोम से रोग ग्रस्त मछली जाल में आती है और रोग की प्रारम्भिक अवस्था में है तो 1 कि.ग्रा. पोटेशियम परमैग्नेट प्रति हे. जलक्षेत्र की दर से घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें तथा 15 दिन के पश्चात 250 कि.ग्रा. बुझा हुआ चूना का घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें। पोटेशियम परमैग्नेट एवं चूना को 1 महीने के अन्तराल के बाद 3 बार घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें, अथवा रोगग्रस्त तालाब में मत्स्य रोग की रोकथाम हेतु 1 लीटर/हे. की दर से सीफैक्स का घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें।
- जिन तालाबों में मछलियों को रोग नहीं लगा है उनमें भी 250 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से बुझे हुए चूने का घोल बनाकर छिड़काव करें।

रेशम पालन

- दिसम्बर माह के प्रथम सप्ताह में शहतूत वृक्षारोपण की प्रुनिंग एवं ट्रीमिंग का कार्य प्रारंभ कराते हुये शहतूत बागानों में से खरपतवार एवं घास आदि की सफाई समय से करा ली जाय तदोपरांत अन्य कर्षण–कार्य प्रारंभ कर दिया जाय।

वानिकी

- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- पॉपलर के पौध रोपण हेतु गड्ढ़ों की खुदाई करें।
- जो कृषक वन पौधशाला को एक व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहते हैं वे वन विभाग की निकटतम प्रदर्श पौधशाला में कम्पोस्टिंग, रूट ट्रेनर का प्रयोग एवं पौधशाला से सम्बन्धित समस्त जानकारी/प्रशिक्षण प्राप्त कर लें। इसके लिए जिले में डी.एफ.ओ. तथा तहसील में रेन्ज कार्यालय से सम्पर्क करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 21 दिसम्बर, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

30.11.23

(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।

18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
45. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

30-11-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की सोलहवीं बैठक दिनांक 30 नवम्बर, 2023 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. विजय बहादुर द्विवेदी, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ
4. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
5. डा. अतुल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ
6. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)
7. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
8. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ
9. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ
10. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
11. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
12. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
13. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
14. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
15. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश
16. श्री सुमित कुमार, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ